पाठ - डायरी का एक पन्ना

- सीताराम सेकसरिया

प्रत्येक 1,2 अंक

(1) कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्त्वपूर्ण था?

उ०- कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन इसलिए महत्त्वपूर्ण था क्योंकि आज के ही दिन को सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता की वर्षगाँठ के रूप में मनाया जा रहा था। इस दिन कलकत्ता वासियों को स्वयं को देशभक्त सिद्ध करने का मौका मिल रहा था।

---

(2) सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

उ०- सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था जिन्होंने इस जुलूस का पूरा प्रबंध किया था उन्होंने जगह-जगह फोटो का भी प्रबंध किया था और बाद में पुलिस द्वारा उन्हें पकड़ लिया गया था।

---

(3) विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उ० अविनाश बाबू प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री थे। उन्होंने श्रद्धानंद पार्क में झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया उनके साथ आए लोगों को मार-पीट और वहाँ से हटा दिया।

---

(4) लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

उ०- लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर झंडा फहराकर इस बात का संकेत देना चाहते थे कि वे भी

अपने देश की स्वतंत्रता और राष्ट्रीय झंडे का पूर्ण सम्मान करते हैं।

(5) पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया?

उ०- पुलिस कमिश्नर यह नहीं चाहते थे कि सभा में भाग लेने वाले कार्यकर्ता और जनता एकजुट होकर झंडा फहराए और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़े। इसलिए पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों और मैदानों को घेर लिया।

प्रत्येक - 2, 3 अंक

(6) 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई?

उ०- 26 जनवरी 1931 का दिन कलकत्ता वासियों के लिए महत्वपूर्ण था। इसे अमर बनाने के लिए कलकत्ता वासियों ने एकजुट होकर काफी तैयारियाँ कीं। शहरों के प्रत्येक भाग में राष्ट्रीय झंडे लगाए। बड़े बाज़ार के प्रायः सभी मकानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहरा रहे थे, कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। प्रत्येक मार्ग पर उत्साह और नवीनता दिखाई दी।

(7) 'आज जो बात थी वह निराली थी'- किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आपमें निराला है? स्पष्ट करें।

उ०- 26 जनवरी का दिन अपने आप में निराला था। कलकत्ता वासी पूरी नवीनता के साथ इस दिन को यादगार दिन बनाने की तैयारी में जुटे थे। अंग्रेजी सरकार के कड़े सुरक्षा प्रबंधों के बाद भी हज़ारों की संख्या में लोग लाठी खाकर भी जुलूस में भाग ले रहे थे। सरकार द्वारा सभा भंग करने की कोशिशों के बावजूद भी

बड़ी संख्या में आम जनता और कार्यकर्ता संगठित होकर मोनुमेंट के पास एकत्रित हो रहे थे। स्त्रियों ने भी इस आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस दिन अंग्रेजी कानून को खुली चुनौती देकर कलकत्ता वासियों ने देश प्रेम और एकता का अद्भुत प्रदर्शन किया।

---

(8) पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

उ०- पुलिस कमिश्नर द्वारा निकाले गए नोटिस में लिखा था कि अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। सभी कार्यकर्ताओं को नोटिस दे दिया गया यदि आप सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएंगे। उधर कौंसिल की तरफ से यह नोटिस निकाला गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। कौंसिल की तरफ से यह खुली चुनौती थी।

---

(9) धर्मतल्ले पर भीड़ के लिए जुलूस क्यों टूट गया।

उ०- सुभाष बाबू के नेतृत्व में जुलूस बड़े जोश के साथ आगे बढ़ रहा था। थोड़ा आगे बढ़ने पर पुलिस ने सुभाष बाबू को पकड़कर गाड़ी में बैठा लिया और लाल बाजार के लॉकप में भेज दिया। जुलूस में आगे चलने वाले आंदोलन कारियों पर पुलिस ने लाठियाँ बरसानी शुरू कर दी थीं। बहुत से लोग बुरी तरह घायल हो चुके थे। पुलिस की बर्बरता के कारण जुलूस बिखर गया था।

मोड़ पर पचास-साठ स्त्रियाँ धरना देकर बैठ गई थीं। पुलिस उन्हें पकड़कर लाल बाज़ार भेज दिया था।

(10) डा॰ दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख कर रहे थे, उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।

उ०- डॉ॰ दासगुप्ता द्वारा घायल लोगों के फोटो खिंचवाने की यह वजह हो सकती है कि अपनी स्वतंत्रता की माँग करनेवाले भारतीय लोगों पर अंग्रेज़ी सरकार द्वारा ढाए जाने वाले ज़ुल्मों का प्रत्यक्ष प्रमाण पत्र लोगों को दिखाया जा सके। यही भी हो सकता है कि पुलिस की इस बर्बरता को देखकर देश के अन्य लोग भी प्रेरित होकर देश की स्वतंत्रता के लिए आगे आएँ और संगठित होकर सरकार की गलत नीतियों का विरोध करें।
(सभी 3 से 5 अंक)

(11) सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

उ०- सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की महत्वपूर्ण भूमिका थी। गुजराती सेविका संघ की ओर से जुलूस निकाला गया। मारवाड़ी बालिका विद्यालय में झंडोत्सव मनाया गया जिसमें जानकी देवी और मदालसा बजाज जैसी स्त्रियों ने भी भाग लिया। पुलिस द्वारा किए गए प्रबंध और लाठीचार्ज की परवाह किए बिना ही जगह-जगह से स्त्रियाँ मोनुमेंट के पास पहुँचीं। सरकारी कानून का उल्लंघन कर लगभग 105 स्त्रियों ने अपनी गिरफ्तारी दी। आंदोलनकारियों के साथ मिलकर स्त्रियाँ भी पुलिस की बर्बरता की शिकार हुई।

(12) 'ओपन लड़ाई' किसे कहा गया है?

उ- जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ, तब आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदानों में नहीं की गई थी। 26 जनवरी 1931 की यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। सर्वसाधारण की उपस्थिति में ठीक समय पर सभा की गई, स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी गई। ऐसा खुला चैलेंज देकर सभा पहले नहीं की गई थी। इसलिए इसे ओपन लड़ाई कहा गया है।

---

(13) आजादी के संघर्ष में विद्यार्थियों की क्या भूमिका थी?

उ- आजादी के संघर्ष में विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। मारवाड़ी बालिका विद्यालय - जैसे अनेक विद्यालयों में लड़कियों ने झंडोत्सव मनाया था। उन्हें जानकारी दी, मदालसा जैसी नेताओं ने संबोधित किया था। बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने भी झंडा फहराने में अग्रणी भूमिका निभाई थी। इससे पता चलता है कि स्वतंत्रता संघर्ष में विद्यार्थियों का भी भरपूर योगदान था।

---

(14) 'डायरी का एक पन्ना' पाठ में क्या संदेश दिया गया है?

उ- भारत को संघर्ष और बलिदान से स्वतंत्रता प्राप्त हुई है- यह पाठ इसका प्रमाण है। यद्यपि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य की घोषणा कर दी थी किंतु अंग्रेज शासकों ने इसे नहीं माना। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को दबाने का प्रयास किया। जब सरकार का पता चला उसने आंदोलनकारियों

पर लाठियाँ बरसाईं, उन्हें पकड़कर जेलों में बंद किया। सभी वर्गों ने मिल-जुलकर संघर्ष किया, बलिदान किए तब जाकर भारतीयों को आज़ादी मिल पाई। इस पाठ में देश प्रेम का संदेश दिया गया है। साथ ही यह बताया गया है कि देश प्रेम सर्वोपरि होता है। अतः इसके लिए सदा बलिदान को तैयार रहना चाहिए।

---

(15) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पुलिस की भूमिका पर टिप्पणी कीजिए।

उ.– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पुलिस की भूमिका अत्यंत आपत्तिजनक थी, वह पूर्ण रूप से अंग्रेजी शासन की गुलाम थी। पुलिस के मन में आंदोलनकारियों के प्रति कोई नरमी नहीं थी। उन्होंने आंदोलन को दबाने के लिए पूरी कठोरता और क्रूरता से काम किया। उन्होंने आंदोलनकारियों पर लाठियाँ बरसाईं, उन्हें गिरफ्तार किया।

---

(16) पुलिस झंडा गाड़ने का विरोध क्यों कर रही थी?

उ.– भारतीय झंडा गाड़कर यह सिद्ध करना चाहते थे कि सरकार की नीतियों का विरोध करना चाहते हैं। दूसरी ओर पुलिस के मन में आंदोलनकारियों के प्रति कोई नरमी नहीं थी। उन्होंने आंदोलन को दबाने के लिए पूरी कठोरता का पालन करते हुए अंग्रेजी सरकार की ओर से जारी आदेश "भारतीयों को स्वतंत्रता दिवस न मनाने दिया जाए" को सफल बनाने का प्रयास किया। यही कारण था कि पुलिस ने जुलूस निकालनेवालों का विरोध किया।

---

(17) वृजलाल गोयनका झंडे के जुलूस में क्यों शामिल हो गया और कैसे गिरफ्तार हुआ?

उ.– वृजलाल गोयनका भी आंदोलनकारी था।

वह हाथ में झंडा लेकर मोनुमेंट की ओर इतने जोर से दौड़ा कि अपने आप ही गिर पड़ा। उसे एक अंग्रेजी घुड़सवार ने लाठी मारी और पकड़ा। लेकिन कुछ दूरी पर जाकर छोड़ दिया। तब वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हुआ। इसके पश्चात वह २०० लोगों की एकत्रित

(18) लेखक की डायरी का एक पृष्ठ भावी पीढ़ी को किस प्रकार प्रेरित करता है? स्पष्ट कीजिए।

उ० - प्रस्तुत पाठ के लेखक आजादी की कामना करने वाले अग्रणी लोगों में से एक थे। उनकी निजी डायरी का यह एक पृष्ठ स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की अनमोल धरोहर है। यह पाठ हमारी भावी को क्रांतिकारियों व देशभक्तों की कुर्बानी की याद दिलाता ही है, साथ ही यह भी उजागर करता है कि एक संगठित समाज यदि दृढ़ संकल्प कर ले तो ऐसा कुछ भी नहीं जो वह न कर सके। देश भक्ति की गहन भावना के आगे कुछ भी महत्व नहीं रखता है। अतः हमें संगठित होकर अन्याय का विरोध करना चाहिए। अन्याय के आगे सिर नहीं झुकाना चाहिए।

(19) २६ जनवरी १९३१ का आंदोलन पूरी तरह जनांदोलन किस प्रकार था?

उ० - यह आंदोलन पूरी तरह से जन आंदोलन था। इसमें पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया था। स्त्रियों द्वारा सामूहिक रूप से भाग लेना यह सिद्ध करता है कि यह सच सचमुच जन-आंदोलन था। सभा-स्थल पर उमड़ती हुई हजारों की भीड़ इसके जन-आंदोलन होने का प्रमाण है।

(20) 26 जनवरी 1931 के दिन कलकत्ता के बड़ा बाजार का दृश्य कैसा था?

उ- 26 जनवरी 1931 के दिन बड़ा बाजार को खूब सजाया गया था। सभी मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था। कई मकान तो इस तरह सजाए गए थे कि मानों स्वतंत्रता मिल गई हो। सभी रास्तों पर उत्साह और नवीनता युक्त वातावरण मालूम होता था। पुलिस अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त लगा रही थी। मोटर लारियों में गोरखे और सारजेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे।